डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
मोबाइल नंबर- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 2 (H) दिनांक - 28-05-2020

विषय- संस्कृत (भारतीय दर्शन)

भारतीय दर्शन का सच्चा स्वरूप-

इस विषय में आज भी अनेक भ्रांत धारणाएं हमारे हृदय में विद्यमान है। इसका कारण कुछ तो अपने दर्शन ग्रंथों सेअपरिचय है और बहुत -कुछ पश्चात्य शिक्षकों की शिक्षा का दुष्परिणाम है। स्वार्थी लोगों ने हमारे दर्शन को निराशावादी कह कर बदनाम कर रखा है। परंतु इसमें प्रवेश करके इसका अवलोकन करने से तो यह दर्शन नितांत आशावादी रूप में झलकता है। तथ्य कथा कुछ दूसरी ही है। भारत में दर्शन का जन्म दुखों की जिज्ञासा तथा उनके दूर करने के उपायों के चिंतन से होता है। (दु:खत्रयाभिघाताज् जिज्ञासा तदपघातके हेतौ--सांख्यकारिका)। इस भवसागर में प्राणी क्लेशों के लहरों के थपेड़ों को खाकर, पद-पद पर विपत्तियों से आक्रांत होकर इतना अधीर हो उठता है कि उसे जीवन में नैराश्य की दीर्घ परंपरा प्रतीत होने लगता है । दर्शन ही इसे सच्चा आश्वासन देकर उस पार ले जाने वाली नौका के समान सबको आश्रय देकर पार पहुंचा देता है। यदि हमारे दार्शनिकों की जिज्ञासा दु:ख ही तक समाप्त होती तो हम उन्हें निराशावादी मानने के लिए सोचते, परंतु वे तो आगे बढ़ते हैं और वे उसके कारणों को ढूंढ कर उसे सदा (वास्तविक मोक्ष) छुटकारा पाने का मार्ग बतलाते हैं। मौक्ष-शास्त्र भी चिकित्सा-शास्त्र के समान ही चतुर्व्यूह है। रोग, रोग के हेतु, आरोग्य तथा भैंषज्य इन चार तथ्यों के ऊपर वैद्यक-शास्त्र स्थित है। उसी प्रकार मोक्ष-शास्त्र भी संसार, संसारहेतु मोक्ष, और मोक्षोपाय के ऊपर अवलम्बित है । आनन्दमय आत्मा की प्राप्ति को चरम लक्ष्य माननेवाला दर्शन नैराश्यवादी नहीं हो सकता।

हमारा दर्शन आशावादी है। वह मनुष्यों को सदैव आगे बढ़ने का उपदेश देकर उस गंतव्य देश की ओर ले जाता है, जिसे पाने के बाद अन्य कोई प्राप्त व्यवस्तु अवशेष ही नहीं रहती। इसके पाने का मार्ग अवश्य कठिन है, परंतु मार्ग तो है । यह नैराश्यवाद का सूचक है? उपनिषद के शब्दों में-

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत। क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति ।। (कठोपनिषद 1/3/14)

कठोपनिषद् का यह प्रख्यात मंत्र मानवों को जागृति की ओर बढ़ने के लिए उपदेश दे रहा है। वह कहता है- अरे अविद्या-ग्रस्त लोगों! उठो, अज्ञान निद्रा से जागो और श्रेष्ठ पुरुषों के समीप जाकर ज्ञान प्राप्त करो । ज्ञान का पंथ बड़ा ही कठिन है। जिस प्रकार छुरे की धार तेज और दुस्तर (कठिनता से पार करने लायक) होती है, तत्व ज्ञानी लोग उस मार्ग को वैसा ही दुर्गम बतलाते हैं। फलत:योग्य आचार्यो से मिलकर तत्वज्ञान के रहस्य को प्राप्त करो । यह आशावादी दर्शन का शंखनाद है।

भारतीय तत्वज्ञान की व्यापक दृष्टि सभी विद्वान् के समादर का पात्र बनती है । यहां के दार्शनिकों ने 'सत' की व्याख्या करने में अनुभवगम्य विषय की ओर ध्यान देने की अपेक्षा अनुभव कर्ता विषयी की ओर अधिक ध्यान दिया है। तर्क-बुद्धि का अनुसरण कर आत्मा को तुच्छ अनात्मा से पृथक् करना विद्वानों का प्रधान कार्य था । इस प्रकार आत्मानम् विद्धि-आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: । आत्मदर्शन ही यहां का मूल मंत्र रहा है। परंतु आत्मा का परोक्ष - ज्ञान न होकर अपरोक्ष ज्ञान होना चाहिए। इस विषय में हमारा दर्शन अन्य दर्शनों से बहुत आगे है । वह तत्वज्ञान की व्यवहारिक शिक्षा देता है। जिस प्रकार दृश्यमान विविधता के अंतस्तल में विद्यमान रहने वाली एकता का निरूपण करने वाला अद्वैत वेदांत तात्विक विवेचन की पराकाष्ठा सूचित करता है, उसी प्रकार विभिन्न मानस वृत्तियों का सर्वांगीण निरूपण कर योग तत्वज्ञान की व्यावहारिक शिक्षा देता है ।

भारतीय दर्शनों की आलोचना करने से दो सामान्य सिद्धांत दृष्टिगत होते हैं।

पहला है, नानात्मक जगत् की पारंपरिक पारमार्थिक एकता, यह है तार्किक सिद्धांत अर्थात वेदांत। दूसरा है, ध्यान, धारणा, समाधि के द्वारा इस अनुस्यूत एकता अर्थात मूलभूत आत्म-तत्व का साक्षात अनुभव। यह है व्यवहारिक सिद्धांत योग। भिन्न-भिन्न दर्शनों में इन सिद्धांतों की मान्यता आंशिक रूपेण या पूर्ण रूप से स्वीकृत की गई है।

हमारे दर्शन जागृत, स्वप्न तथा सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं के चैतन्य की विशद व्याख्या करने में निरत है। जाग्रत दशा की व्याख्या करने से द्वैतवाद तथा बहुत्वाद (प्लुरेलिज्म) के समर्थक तत्वज्ञान का उदय होता है । स्वप्न दशा की व्याख्या विषयी-प्रधान दर्शन (सबजेक्टिविज्म) की जननी है और सुसुप्त का धार्मिक निरूपण रहस्यवाद (मिस्टिसिज्म) का जनक होता है। पाश्चात्य दर्शन जाग्रत दशा तथा तत् सम्बन्ध चैतन्य के समझाने में विशेष व्यस्त है। पाश्चात्य मनोविज्ञान मन की अवचेतन दशा का विवरण हाल में प्रस्तुत करने लगा है। इसीलिए हम वहां इस त्रिविध अनुभव के एक अंश की व्याख्या पाते हैं। परंतु हमारा दर्शन इस अनुभव के प्रत्येक अंश का ग्रहण कर उसके यथार्थ निरूपण करने में कृत्त कार्य हुआ है। इसीलिए अनुभव की पूर्ण व्याख्या यहां की चिंतन धाराओं की भूयसी विशेषता रही है।